

नेक बनने का नुस्खा

पन्द्रहवीं सदी की अज़ीम इल्मी व रूहानी शख्सियत
शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी
हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी رحمۃ اللہ علیہ

ने इस पुर फ़ितन दौर में नेकियां करने और गुनाहों से बचने के
तरीकों पर मुश्तमिल शरीअतो तरीक़त का जामेअ मज्मूआ

40 म-दनी इन्आमात

40 Madani In-aamaaT (Hindi)

ब सूरते सुवालात अता फ़रमाए हैं । इन के
मुताबिक़ आसानी से अमल करने का तरीक़ा कार
आख़िर में दिया गया है । मज़ीद मा'लूमात के लिये
मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से किताब

जन्नत के तलब गारों के लिये म-दनी गुलदस्ता तलब फ़रमा सकते हैं ।

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

म-दनी वज़ाहतें

म-दनी इन्आमात की वज़ाहतों और रिआयतों से मु-तअल्लिक़ सुवालात के जवाबात के लिये तन्ज़ीमी तौर पर चार क़ाइदे मुक़र्रर किये गए हैं।

क़ाइदा नम्बर 1 : जो यौमिय्या म-दनी इन्आमात चन्द “जुज़्ज़य्यात” पर मुश्तमिल हैं।

म-सलन : तहज्जुद, इश्राक़, चाश्त, अव्वाबीन वाला म-दनी इन्आम, इस म-दनी इन्आम में 4 जुज़ हैं, लिहाज़ा ऐसे म-दनी इन्आमात पर अक्सर पर अमल होने की सूरत में तन्ज़ीमी तौर पर अमल मान लिया जाएगा।

(अक्सर से मुराद आधे से ज़ियादा म-सलन **100** में से **51** अक्सर कहलाएगा)¹

क़ाइदा नम्बर 2 : बा 'ज़ म-दनी इन्आमात ऐसे हैं जिन पर किसी दिन अमल न होने की सूरत में तन्ज़ीमी तौर पर दूसरे दिन अमल की तरगीब है।

مدینه

1 : येह क़ाइदा म-दनी इन्आम नम्बर 24 पर लागू नहीं होता, इसी तरह म-दनी इन्आम नम्बर 2 के चार अज्ज़ा : “(1) पांचों नमाज़ें (2) बा इमामा (3) तक्बीरे ऊला के साथ (4) बा जमाअत” में से पहले और चौथे जुज़ पर भी लागू नहीं होता।)

म-सलन : चार सफ़हात फ़ैज़ाने सुन्नत, **313** बार दुरूदे पाक पढ़ने या कन्जुल ईमान शरीफ़ से कम अज़ कम **3** आयात की तिलावत (मअ तरजमा व तफ़सीर) करने से महरूमी रही । इस सूरत में जितने दिन नागा हुवा, बा 'द वाले दिनों में रह जाने वाले दिनों का हिसाब लगा कर उतनी ही मर्तबा अमल करने पर तन्ज़ीमी तौर पर अमल मान लिया जाएगा ।

काइदा नम्बर 3 : बा 'ज़ म-दनी इन्आमात ऐसे हैं जिन पर अमल की आदत बनाने में वक़्त लगता है ।

म-सलन : कहकहा, तू तुकार से बचने और निगाहें झुका कर चलने की आदत बनाने वाले इन्आमात, ऐसे म-दनी इन्आमात पर ज़मानए कोशिश के दौरान अमल मान लिया जाएगा । (कोशिश पाए जाने के लिये ज़रूरी है कि कम अज़ कम दिन में 3 दफ़आ अमल करे)

काइदा नम्बर 4 : बा 'ज़ म-दनी इन्आमात ऐसे हैं जिन पर सहीह उज़्र (या'नी हकीकी मजबूरी) की बिना पर अमल की कोई सूरत न हो या इस दौरान दूसरे म-दनी काम में मशगूलियत है ।

म-सलन : जिम्मेदार वग़ैरा दीगर म-दनी कामों में मस्रूफ़ियत

के बाइस किसी म-दनी इन्आम म-सलन : मद्र-सतुल मदीना बालिगान में शरीक न हो सके या वालिदैन की वफ़ात या उन की दूसरे शहर रिहाइश की सूरत में दस्त बोसी और अनपढ़ होने के बाइस लिख कर बात करने से महरूमी है तो भी तन्ज़ीमी तौर पर इन पर अमल मान लिया जाएगा ।

यौमिय्या 29 म-दनी इन्आमात

पहला दरजा 15 म-दनी इन्आमात

- (1) क्या आज आप ने कुछ न कुछ जाइज़ कामों से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कीं ? नीज़ कम अज़ कम दो को इस की तरगीब दिलाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (2) पांचों नमाज़ें बा इमामा तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत मस्जिद में अदा करते हैं या नहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (3) आप ने नमाज़े पन्जगाना के बा'द और सोते वक़्त कम अज़ कम एक एक बार आ-यतुल कुरसी और तस्बीहे फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पढ़ने का मा'मूल बनाया है या नहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(4) रोज़ाना कम अज़ कम 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं या नहीं नीज़ रोज़ाना कम अज़ कम एक घन्टा अपने घर पर सबक़ याद करते हैं या नहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(5) रोज़ाना दो दर्स (मस्जिद, घर, जहाँ सहूलत हो) देते या सुनते हैं या नहीं ? (दो में से घर का एक दर्स ज़रूरी है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(6) किसी का नाम बिगाड़ना हुक्मे कुरआनी के ख़िलाफ़ है। किसी को (बिला इजाज़ते शर-ई) लम्बा, ठिगना, मोटा वगैरा तो नहीं कहते ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(7) किसी मज़मून में आप की मा'लूमात ज़ियादा होने की सूरत में हो सकता है कम मा'लूमात वाला आप को हकीर लगे। इस तरह का वस्वसा आने की सूरत में आप खुद को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से डराते हैं या नहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(8) खुदा न ख़्वास्ता तू तुकार की आदत तो नहीं ? ख़्वाह एक दिन का बच्चा भी हो उस से आप कह कर मुख़ातिब हों पीछे से भी

जम्अ का सीगा इस्ति'माल करें म-सलन ज़ैद आया, ज़ैद कहता था की जगह ज़ैद आए, ज़ैद कहते थे वगैरा ।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(9) क्या आज आप ने हत्तल इम्कान कहकहा लगाने (या'नी खिलखिला कर हंसने) से बचने की कोशिश की ?(ज़रूरतन मुस्कुराना सुन्नत है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(10) किसी पर गुस्सा आ जाने की सूरत में चुप रह कर गुस्से का इलाज करते हैं या बोल पड़ते हैं ? (أَعُوذُ بِاللّٰهِ वगैरा पढ़ सकते हैं) नीज़ दर गुज़र से काम लेते हैं या इन्तिकाम (या'नी बदला लेने) का मौक़अ ढूँडते हैं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(11) किसी ने अगर आप की शिकायत (उस्ताद या वालिदैन वगैरा से) कर दी तो आप भी बदला लेने के लिये मौक़अ का इन्तिज़ार करते हैं या दुरुस्त शिकायत पर शुक्रिया अदा करते और ग़लत शिकायत पर मुआफ़ फ़रमा कर सवाब का ख़ज़ाना हासिल करते हैं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (12) आप में कहीं दूसरे इस्लामी भाइयों से मांग मांग कर उन की चीजें इस्ति'माल करने की गन्दी आदत तो नहीं ? (दूसरों से सुवाल की आदत निकाल दीजिये ज़रूरत की चीज़ निशानी लगा कर अपने पास ब हिफ़ाज़त रखिये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (13) किसी से बात करते वक़्त अक्सर आप की निगाह नीची होती है या मुखातब (या'नी जिस से बात कर रहे हैं उस) के चेहरे पर ? (बात करते हुए सामने वाले के चेहरे पर निगाहें गाड़ना सुन्नत नहीं) नीज़ क्या आज आप ने अपने घर के बरआमदों से (बिला ज़रूरत) बाहर नीज़ किसी और के दरवाज़ों वगैरा से उन के घरों के अन्दर झांकने से बचने की कोशिश की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (14) सुन्नत के मुताबिक़ आधी पिंडली तक कुरता (सफ़ेद) सामने जेब में नुमायां मिस्वाक और टख़्तों से ऊंचे पाइंचे, सर पर ज़ुल्फ़े, सारा दिन इमामा शरीफ़ (घर में भी और बाहर भी) सजाने का मा'मूल है या नहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (15) जब तक दूसरा बात कर रहा हो आप इत्मीनान से सुनते हैं या उस की बात काट कर अपनी बात शुरू कर देते हैं ? नीज बहुत सों की आदत होती है कि बात समझ जाने के बा वुजूद बे साख्ता : हैं ? या क्या ? वगैरा बोल कर दूसरों को ख्वाह म ख्वाह अपनी बात दोहराने की ज़हमत देते हैं आप की भी तो कहीं येह आदत नहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

दूसरा दरजा 14 म-दनी इन्आमात

- (16) घर (या मद्रसे वगैरा) का हर खाना सब्र व शुक्र के साथ तनावुल फ़रमा लेते हैं या पसन्द न आने पर **مَعَادَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** ना पसन्दीदगी का इज़हार करते हैं ? खाने को ऐब लगाना सुन्नत नहीं और मुंह न बिगाड़ें ।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (17) घर, बस, ट्रेन, मद्रसे वगैरा में आते जाते और गलियों से गुज़रते हुए राह में खड़े या बैठे हुए **मुसल्मानों को सलाम** करने की आदत बनाई है या नहीं ? (मद्रसे में जो जो सुन्नतें सिखाई जाती हैं घर में भी उन पर अमल जारी रखें)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(18) फैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के स. 221 पर दिये हुए तरीके के मुताबिक (बाहर और घर में) पर्दे में पर्दा की आदत डाली है या नहीं ? (सोते वक्त पाजामे पर मजीद एक चादर तहबन्द की तरह बांध लें और एक चादर ऊपर से भी ओढ़ लें إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ पर्दे में पर्दा हो जाएगा)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(19) बा'द नमाज़े इशा (इल्मी मशाग़िल वगैरा से फ़ारिग़ हो कर) जल्द तर सोने की आदत डालें। जब आप को नमाज़ के लिये या यूँ ही जगाया जाता है तो फ़ौरन उठ जाते हैं या दोबारा लैट जाते हैं या बैठे बैठे ऊँघ जाते हैं ? ऐसा कितनी बार होता है ? जब सो कर उठते हैं (चाहे बार बार बिछोना छोड़ना पड़े) हर बार बिछोना लपेट लेते हैं या नहीं ? सोने का वक्त ख़त्म हो जाने पर बिछोना तह कर के उस की जगह पर रखते हैं या वहीं पड़ा रहने देते हैं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(20) म-दनी मर्कज़, निगरान, उस्ताद और वालिदैन् की (येह सब जब तक ख़िलाफ़े शर-अ करने का हुक्म न दें) इताअत फ़रमाते हैं या नहीं ? नीज़ क्या आज आप ने यक्सूई के साथ फ़िक्रे मदीना (या'नी अपने आ'माल का मुहा-सबा) करते हुए जिन जिन म-दनी

इन्आमात पर अमल हुवा उन की रिसाले में खाना पुरी फरमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (21) रोज़ाना कम अज़ कम किसी एक नमाज़ के बा'द अपने मां बाप और अपने क़ारी साहिब के लिये अच्छी अच्छी दुआएं करते हैं या नहीं ? नीज़ क्या आज आप ने घर में म-दनी माहोल बनाने के म-दनी फूलों के मुताबिक़ मुम्किन सूरत में अमल किया ? ("म-दनी फूल" रिसाले के आखिर में मुला-हज़ा फरमाइये) (वालिदैन और उस्ताद को आता देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाएं वालिदैन और उस्ताद के सामने हमेशा आवाज़ पस्त रखें उन से आंखें हरगिज़ न मिलाएं अपने उस्ताद साहिब बल्कि किसी के भी पीछे से नक़लें न उतारें)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (22) उस्ताद व मुन्तज़िमीन की कोई बात अगर ना गवार गुज़रे तो सब करते हैं या مَعَاذَ اللَّهِ दूसरों पर इस का इज़हार करने की नादानी कर बैठते हैं ? मद्रसे के इन्तिज़ामात की कमज़ोरियों का बयान इन्तिज़ामिया के इलावा किसी और के आगे करना बहुत बुरी बात है । नीज़ अगर किसी इस्लामी भाई की कोई बात ना गवारे खातिर हो या वोह ख़ता कर बैठे तो उस का दूसरों पर इज़हार करने के बजाए अहूसन

तरीके पर खुद ही उस की इस्लाह फ़रमा दें ।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (23) मद्रसे के निज़ामुल अवकात की पाबन्दी फ़रमाते हैं या नहीं ?
 वक्त पर पहुँच कर आखिरी पीरियड तक पढ़ाई करते और अस्बाक़ याद करते हैं या इधर उधर की बातों में वक्त जाएँ कर देते हैं ?
 किसी पीरियड में उस्ताद साहिब या मुन्तज़िमीन की इजाज़त लिये बिग़ैर चुपके से घर वग़ैरा तो नहीं चले जाते ? (मुक़ीम तु-लबा के लिये दिन हो या रात बाहर जाने के लिये हर वक्त इजाज़त लेना लाज़िमी है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

- (24) क्या आप को ग़ीबत, चुग़ली और ह़सद की ता'रीफ़ मा'लूम है ?
 इन रज़ाइल और ज़िद, तन्ज़, हंसी मज़ाक़ से आप बचते हैं या नहीं ?
 (बहारे शरीअत हिस्सा 16 से ग़ीबत, चुग़ली और ह़सद का बयान पढ़ या सुन लीजिये) किसी के अन्दर कोई ख़ामी या बुराई हो उसे उस की पीठ पीछे बयान करना ग़ीबत कहलाता है जो कि गुनाहे कबीरा है । किसी के लिबास को पीछे से बे ढंगा, मैला वग़ैरा कहा, या कहा कि उस की आवाज़ बेकार है येह सब ग़ीबत में दाख़िल है । जब कि वोह बुराई या ख़ामी या ख़राबी उस में मौजूद हो और अगर

न हो तो बोहतान है जो ग़ीबत से भी बड़ा गुनाह है। किसी का हाफ़िज़ा अच्छा हो या अच्छी आवाज़ में ना'त पढ़ता हो तो उस के बारे में येह तमन्ना करना कि उस का हाफ़िज़ा कमज़ोर पड़ जाए या उस की आवाज़ ख़राब हो जाए येह ह़सद में दाख़िल है। ह़सद करना गुनाह है। ह़दीसे पाक में हैं “ह़सद नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को।” (सनن अबी दाउद, ३६०/४, حدیث: ६९०३)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(25) क्या आप हमेशा सच बोलते हैं बिना हाज़ते शर-ई “तोरिया” तो नहीं कर बैठते? तोरिया या'नी लफ़्ज़ के जो ज़ाहिरी मा'ना हैं वोह ग़लत है मगर इस ने दूसरे मा'ना मुराद लिये जो सहीह हैं। ऐसा करना बिना हाज़त जाइज़ नहीं और हाज़त हो तो जाइज़ है। तोरिया की मिसाल येह है कि आप ने किसी को खाने के लिये बुलाया वोह कहता है मैं ने खाना खा लिया इस के ज़ाहिरी मा'ना येह हैं कि इस वक़्त का खाना खा लिया है मगर वोह येह मुराद लेता है कि कल खाया है येह भी झूट में दाख़िल है। (एलमगीरी, ३०२/५, ملخصاً)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(26) सबक सुनाते वक़्त अगर कोई इस्लामी भाई ग़लती कर बैठे तो आप हंस कर उस की दिल आज़ारी तो नहीं कर बैठते अगर आप कभी

ऐसी भूल कर बैठे तो अपने उस इस्लामी भाई को राजी कर लें, रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं : जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने अल्लाह ﷻ को ईज़ा दी

(المعجم الاوسط، ٢/٣٨٦، حديث: ٣٦٠٧)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(27) घर या होटल वगैरा में T.V. या V.C.R. या मोबाइल वगैरा पर फ़िल्में डिरामे तो नहीं देखते ? (फ़िल्में डिरामे हरगिज़ न देखा करें। जो अपनी आंखों को नज़रे ह़राम से पुर करता है क़ियामत के रोज़ उस की आंखों में आग भरी जाएगी। T.V. और V.C.R. पर फ़िल्में और डिरामे देखने से हाफ़िज़ा भी कमज़ोर हो सकता है उमूमन नाबीना बच्चे जल्द हाफ़िज़े कुरआन बन जाते हैं इस लिये कि वोह आंखों के ग़लत इस्ति'माल से बचे रहते हैं लिहाज़ा उन का हाफ़िज़ा क़वी होता है। आप भी आंखों के ग़लत इस्ति'माल से बचें और आंखों का कुफ़्ले मदीना लगाएं)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(28) ज़बान पर कुफ़्ले मदीना लगाते हुए ग़ैर ज़रूरी बातों की आदत निकालने और ख़ामोशी की आदत बनाने की कोशिश जारी है या नहीं ? नीज़ आप कुछ न कुछ इशारे से भी और रोज़ाना कम अज़

कम चार बार लिख कर भी गुफ्त-गू फ़रमाते हैं या नहीं ? नीज़ फुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में बतौर कफ़ारा फ़ौरन दुरूदे पाक पढ़ने की आदत बनाई है या नहीं ? (उमूमन गूंगे होशियार होते हैं कि वोह ज़बान के ग़लत इस्ति'माल से महफूज़ रहते हैं। आप भी ज़बान पर “कुफ़ले मदीना” लगा लें ताकि फुज़ूल गोई से बच सकें)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(29) खाना हत्तल इम्कान सुन्नत के मुताबिक़ खाते, नीचे गिरे हुए दाने वगैरा चुन कर खा लेते, हड्डियां, गर्म मसाले वगैरा नीज़ खाने के बा'द उंगलियां सब अच्छी तरह चाट लेते और बरतन धो कर पी लेते हैं या नहीं ? (धोना उसी वक्त कहेंगे जब कि खाने का असर बरतन में बाकी न रहे) नीज़ खाने से फ़राग़त के बा'द बरतन उठाने, दस्तर ख़वान साफ़ करने और थाल वगैरा धोने के मुआ-मले में दूसरों से कहीं उलझते तो नहीं ? मद्रसे के नाज़िम साहिब सफ़ाई वगैरा के मु-तअल्लिक़ वक़तन फ़ वक़तन जो हिदायात देते हैं आप उन पर अमल करते हैं या नहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

कुप्ले मदीना कारकर्दगी

म-दनी माह व साल.....

तारीख	लिख कर गुप्त-गू	इशारे से गुप्त-गू	निगाहें गाड़े बिगैर गुप्त-गू	कुप्ले मदीना ऐनक का इस्ति 'माल
	कम अज कम 12 मर्तबा	कम अज कम 12 मर्तबा	कम अज कम 12 मर्तबा	कमो बेश 12 मिनट
1				
2				
3				
4				
5				
6				
7				
8				
9				
10				
11				
12				
13				
14				
15				

श्रुति	लिख कर गुप्त-गू	इशारे से गुप्त-गू	निगाहें गाड़े बिगैर गुप्त-गू	कुपले मदीना ऐनक का इस्ति 'माल
	कम अज कम 12 मर्तबा	कम अज कम 12 मर्तबा	कम अज कम 12 मर्तबा	कमो बेश 12 मिनट
16				
17				
18				
19				
20				
21				
22				
23				
24				
25				
26				
27				
28				
29				
30				
मज्मू'ह				

हफ़तावार 2 म-दनी इन्आमात

(30) आप बा अमल हाफ़िज़े कुरआन या अलिमे बा अमल बनने के लिये दा'वते इस्लामी के माहोल से वाबस्ता हैं। लिहाज़ा आप अपने वालिद वगैरा के हमराह (बालिग़ म-दनी मुन्ने तन्हा या काफ़िले के साथ) हफ़तावार इज्तिमाअ में शुरूअ (तिलावत व ना'त) से ले कर (मअ जिक्रो दुआ व हल्का) आख़िर तक हत्तल इम्कान निगाहें नीची किये सुनते हैं या नहीं ?

(30) क्या आप ने तन्हा या केसिट इज्तिमाअ में कम अज़ कम एक बयान या म-दनी मुज़ा-करे की ओडियो/वीडियो केसिट बैठ कर सुनी या देखी या म-दनी चैनल पर रोज़ाना कम अज़ कम 1 घन्टा 12 मिनट नशिरयात देखीं ?

माहाना 3 म-दनी इन्आमात

(32) आप ने इस माह (मद्रसे की तरफ़ से मुक़र्रर कर्दा छुट्टियों के इलावा) बिना ज़रूरत व बिगैर मजबूरी के छुट्टी तो नहीं की ?

(33) क्या आप को ईमाने मुज्मल, ईमाने मुफ़स्सल, छ^६ कलिमे मअ तरजमा और कुरआन की आख़िरी दस सूरतें याद हैं ? इन्हें हर माह की पहली पीर को पढ़ लेते हैं या नहीं ?

(34) क्या आप ने इस माह की पहली पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी भी पीर शरीफ़) को रिसाला “**ख़ामोश शहज़ादा**” का मुता-लआ फ़रमा कर फुज़ूल गोई से बचने की आदत बनाने के लिये “**यौमे कुफ़ले मदीना**” मनाया ? नीज़ क्या आप ने पिछले महीने का म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने जिम्मेदार को जम्अ करवाया ?

सालाना 7 म-दनी इन्आमात

(35) आप ने अपना आइडियल (मिसाली शख़्सियत) किस को बनाया है ? (अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** के आइडियल आ’ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** हैं)

(36) आप ने किसी एक या चन्द म-दनी मुन्नों से दोस्ती गांठ रखी है या सब के साथ **यक्सां तअल्लुक्तात** रखे हैं ? (बात बात पर रूठना, बार बार एक ही दोस्त को तोहफ़े देना, उस के नाराज़ होने पर या न आने पर रोना सिर्फ़ उसी को पर्चियां लिखते रहना उसी जैसा लिबास वगैरा इस्ति’माल करना वोह इज्तिमाअ में आए तो आना वोह न आए तो खुद भी न आना वगैरा येह सब अन्दाज़ मुनासिब नहीं)

(37) **مَعَادُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** आप के लिबास या मद्रसे के बस्ते वगैरा पर जानदारों की तसावीर या जानवरों के स्टीक़र्ज़ तो नहीं हैं ? (बिस्किट, सुपारी, या च्युंगम वगैरा के पेकेट में से जो जानदारों की तसावीर वाले स्टीक़र्ज़ निकलते हैं उन्हें दरवाजे, दीवार वगैरा पर चस्पां तो नहीं कर डालते ?)

(38) आप की बिल्ली या कुत्ते को सताने या च्युंटियां मार डालने की आदत तो नहीं ? (कुत्ते या बिल्ली वगैरा को न मारें, न सताएं कि जानवर पर जुल्म करना मुस्लिम पर जुल्म करने से बड़ा गुनाह है। एक हदीसे पाक में येह वाक्फ़िआ बयान किया गया है : एक औरत इस लिये जहन्नम में दाख़िल कर दी गई कि उस ने बिल्ली को बन्द कर दिया न खुद कुछ खिलाया न आज़ाद किया कि वोह कुछ खा लेती बिल्ली बेचारी भूक से मर गई।

(صحیح بخاری ४०८/२ حدیث: ३३१८)

(39) **फल्लों वगैरा के छिलके** ला परवाही के साथ गली में फेंकने की आदत तो नहीं ? (केले या पपीते के छिलके या कांच वगैरा ऐसी जगह पर न डालें जहां लोगों को तकलीफ़ पहुंचने का अन्देशा हो। बल्कि ऐसी चीज़ें रास्ते में नज़र आएँ तो उन को हटा देना सवाब है। हदीसे पाक में येह मज़मून मौजूद है कि एक शख़्स ने रास्ते में पड़ी हुई कांटेदार शाख़ रास्ते से दूर कर दी ता कि मुसल्मानों को तकलीफ़ न पहुंचे अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** को उस का येह अमल पसन्द आ गया और उस की मरिफ़रत फ़रमा दी।

(مسلم ص १४१० حدیث: १९१६)

(40) क्या आप अपने उस्तादे मोहतरम से **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** इम्तिहानन भी सुवालात करते हैं ? नीज़ आप की **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** सुन्नी उ-लमा पर तन्कीद की अ़ादत तो नहीं ? (अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** फ़रमाते हैं : जो सुन्नी अ़ालिम की तज्हील करे या उस पर नुक्ता चीनी करे उस से मैं बेज़ार हूं। फिर तन्कीद करने वाला ख़्वाह उस्ताद हो या शागिर्द)

रिज़ाए रब्बुल अनाम के काम

अत्तार का दोस्त : अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** फ़रमाते हैं : जो ज़ैल में दिये गए 6 म-दनी इन्आमात की पाबन्दी करे वोह मेरा दोस्त है। मदीना 1 : **पांचों नमाज़ें** बा इमामा तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत मस्जिद में अदा करे।

मदीना 2 : रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत से कम अज़ कम 2 दर्स (मस्जिद, घर, दुकान वगैरा जहां सहूलत हो) दे या सुने। (दो में से घर का एक दर्स ज़रूरी है)

मदीना 3 : सुन्नत के मुताबिक़ आधी पिंडली तक **कुरता** (सफ़ेद) सामने जेब में नुमायां **मिस्वाक** और टख़्तों से **ऊंचे पाइंचे**, सर पर **ज़ुल्फ़े**, सारा दिन इमामा शरीफ़ (घर में भी और बाहर भी) सजाने का मा'मूल बनाए।

मदीना 4 : घर, बस, ट्रेन, मद्रसे वगैरा में आते जाते और गलियों से गुज़रते हुए राह में खड़े या बैठे हुए **मुसल्मानों को सलाम** करे ।
 मदीना 5 : अपने वालिद वगैरा के हमराह (बालिग़ म-दनी मुन्ने तन्हा या काफ़िले के साथ) **हफ़तावार इज्तिमाअ** में अव्वल ता आख़िर शिर्कत की तरकीब करे ।

मदीना 6 : हफ़्ते में तन्हा या **केसिट इज्तिमाअ** में कम अज़ कम एक **बयान** या **म-दनी मुज़ा-करे** की ओडियो/वीडियो केसिट बैठ कर सुने या देखे ।

अत्तार का प्यारा : अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** फ़रमाते हैं : जो मज़क़ूरा म-दनी इन्आमात पर अमल के साथ 40 में से कम अज़ कम 30 म-दनी इन्आमात का अमिल हो वोह मेरा **प्यारा** है ।

अत्तार का मन्ज़ूरे नज़र : अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** का इर्शाद है : जो मुन्द-र-जए बाला मा'मूलात बजा ला कर **दोस्त** और **प्यारा** बनने के साथ साथ ज़ैल में दिये हुए 6 म-दनी काम पाबन्दी से करे वोह मेरा **“मन्ज़ूरे नज़र”** है ।

मदीना 1 : रोज़ाना कम अज़ कम 12 बार लिख कर गुफ़्त-गू ।
 मदीना 2 : रोज़ाना कम अज़ कम 12 बार इशारे से गुफ़्त-गू ।
 मदीना 3 : रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट कुफ़ले मदीना के ऐनक का इस्ति'माल ।

मदीना 4 : (ज़रूरी गुफ़्त-गू की नौबत आती हो तो) रोज़ाना कम अज़ कम

12 बार सामने वाले के चेहरे पर नज़रें गाड़े बिगैर गुफ्त-गू ।
मदीना 5 : हफ़्ते में कम अज़ कम एक रिसाला पढ़े । (जो रोज़ाना कम
अज़ कम एक रिसाला पढ़ने का मा'मूल बनाए उस से अमीरे अहले
सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ बहुत खुश होते हैं)

मदीना 6 : हर माह यौमे कुफ़ले मदीना मनाए ।

महबूबे अत्तार : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ का फ़रमाने
शफ़क़त है कि जो मुन्द-र-जए बाला तमाम मा'मूलात के साथ साथ
मुकम्मल 40 म-दनी इन्आमात का आमिल हो वोह मेरा “महबूब” है ।

जज़्बाते अत्तार : आह ! आह ! आह ! दिल ख़ौफ़ज़दा है मैं नहीं
जानता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मेरे बारे में खुफ़या तदबीर क्या है ! अलबत्ता
मेरे दिल के जज़्बात येह हैं कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के
सदके में मुझ पर अगर ख़ास करम हो गया तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अपने हर
दोस्त, प्यारे, मन्ज़ूरे नज़र और महबूब को जन्नतुल फ़िरदौस में साथ
लेता जाऊंगा ।

अत्तार किस से बेज़ार : जो इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी की
मर्कज़ी मजलिसे शूरा, इन्तिज़ामी काबीनात व मजालिस वगैरा की बिला
इजाज़ते शर-ई लोगों के सामने मुख़ा-लफ़्त करे वोह न मेरा दोस्त, न
प्यारा, न मन्ज़ूरे नज़र और न महबूब बल्कि क़ल्बे अत्तार उस से
बेज़ार है ।

दुआए अत्तार : या अल्लाह غُرُّوْجَلُّ जो रोज़ाना येह मज्कूरा म-दनी काम कर लिया करे उस अत्तार के दोस्त और प्यारे नीज अत्तार के मन्ज़ूरे नज़र व महबूब को मअ अत्तार जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पड़ोसी बना दे। आमीन

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मर्कजी मजलीसे शूरा

19 म-दनी फूलों में से अख़्ज़ शुदा म-दनी मुन्नो के लिये म-दनी फूल

(1) घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये (2) वालिदा या वालिद साहिब को आते देख कर ता'जीमन खड़े हो जाइये। (3) दिन में कम अज़ कम एक बार वालिद साहिब के हाथ और मां के पाउं चूमा करें। (4) वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, इन से आंखें हरगिज़ न मिलाइये, नीची निगाहें रख कर ही बातचीत कीजिये। (5) इन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शर-अ न हो फ़ौरन कर डालिये (6) सन्जी-दगी अपनाइये ! घर में तू तुकार, अबे तबे और मज़ाक़ मस्ख़री करने, बात बात पर गुस्से हो जाने, खाने में ऐब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझने, बहसें करते रहने की अगर

आप की आदतें हैं तो अपना खवय्या यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआफी तलाफी कर लीजिये । (7) घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** घर के अन्दर भी ज़रूर इस की ब-र-कतें जाहिर होंगी । (8) मां बल्कि घर और बाहर भी एक दिन के बच्चे को भी “आप” कह कर ही मुखातिब हों । (9) बा'द नमाज़े इशा (इल्मी मशाग़िल वगैरा से फ़ारिग़ हो कर) जल्द तर सोने की आदत डालिये । काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज़्र तो ब आसानी (बा जमाअत तकबीरे ऊला के साथ) मुख्यसर आए और फिर काम काज में भी सुस्ती न हो । (10) घर के अपराद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों का सिलसला हो तो बार बार टोकने के बजाए, सब को नरमी के साथ **मक-त-बतुल मदीना** से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ओडियो/वीडियो केसिटें सुनाइये । और **म-दनी चेनल** दिखाइये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** “म-दनी नताइज” बरआमद होंगे । (11) घर में कितनी डांट बल्कि मार भी पड़े, सब्र सब्र और सब्र कीजिये । अगर आप ज़बान चलाएंगे तो “म-दनी माहोल” बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता है कि बे जा सख़्ती करने से बसा अवकात शैतान लोगों को ज़िद्दी बना देता है । (12) म-दनी

माहोल बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ येह भी है कि घर में रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स ज़रूर ज़रूर ज़रूर दीजिये या सुनिये। (13) अपने घर वालों की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये दिलसोज़ी के साथ दुआ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

“الدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ يَا نَبِيَّ دُأَا مَومिन का हथियार है।”

(المستدرک للحاکم ج ۲ ص ۱۶۲ حدیث ۱۸۵) (14) हर नमाज़ के बा'द येह दुआ अव्वल व आख़िर दुरुद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लीजिये اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में म-दनी माहोल काइम होगा। (दुआ येह है :) (اللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ اَرْوَاحًا وَرَبَّ السَّالٰوٰةِ اَعْيُنًا وَاَجْعَلْهُمُ الْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا) (दुआ येह है :) (اللّٰهُمَّ) आयते कुरआनी का हिस्सा नहीं) (मसाइलुल कुरआन, स. 29 माखूज़न) (15) म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल की आदत बनाइये, और घर में नरमी और हिक्मते अ-मली के साथ म-दनी इन्आमात का निफ़ाज़ कीजिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से घर में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।

دینہ

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना।

(پ ۱۹، الفرقان ۷۴)

कारकदर्दगी बराए रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के काम

(1) इस माह के अक्सर दिनों में मज़कूरा म-दनी इन्आमात पर अमल की कोशिश रही ? ☐

(2) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़ कम 12 मर्तबा लिख कर गुफ्त-गू फ़रमाई ? ☐

(3) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़ कम 12 मर्तबा इशारे से गुफ्त-गू फ़रमाई ? ☐

(4) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़ कम 12 मर्तबा चेहरे पर निगाहें गाड़े बिगैर गुफ्त-गू की कोशिश फ़रमाई । ☐

(5) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज़ कम 12 मिनट कुफ़ले मदीना का ऐनक इस्ति'माल फ़रमाया ? ☐

(6) इस माह यौमे कुफ़ले मदीना मनाया ? ☐

(7) इस माह आप ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के कितने रसाइल का मुता-लआ फ़रमाया ? ☐

पहला हफ़्ता ☐

तीसरा हफ़्ता ☐

दूसरा हफ़्ता ☐

चौथा हफ़्ता ☐

कुल ता'दाद ☐

(8) इस माह 40 म-दनी इन्आमात में से कितने पर अमल की कोशिश रही ? ☐

(9) इस माह कितने दिन फ़िक्रे मदीना की सआदत हासिल की ? ☐

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस माह अत्तार का दोस्त ☐ अत्तार का प्यारा ☐ अत्तार का मन्ज़ुरे

नज़र ☐ महबूबे अत्तार ☐ बनने की सआदत हासिल हुई । اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ आयन्दा माह

कम अज़ कम ☐ म-दनी इन्आमात पर अमल की कोशिश करूंगा ।

अमल करने का आसान तरीका

रिसाले में हर म-दनी इन्आम के नीचे 30 दिनों के खाने दिये गए हैं। रोज़ाना वक़्ते मुकर्रर पर फ़िक़्रे मदीना (या'नी मुह्रा-सबे के दौरान खाने पुर करने का सिलसिला) कीजिये जिन म-दनी इन्आमात पर अमल की सआदत मिली, नीचे खाने में (<) का निशान वरना (O) बना दीजिये ۞ ب ت د ر ز ح ط ی ک ع ف ق ک ح ط ی ک ع ف ق ک ح ط ی ک ع ف ق ک ح ط ی ک ع ف ق क त द र ज ञ ण फ ब त दरीज अमल में इजाफ़े के साथ साथ दिल में गुनाहों से नफ़रत पाएंगे।

हृदीसे पाक में है : (आख़िरत के मुआ-मले में) घड़ी भर ग़ौरो फ़िक़र करना 60 साल की इबादत से बेहतर है।

(الجامع الصغير للسيوطي ، الحديث 5897 ص 365 دار الكتب العلمية بيروت)

दुआएं अतार : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जो हर माह तेरी रिज़ा के लिये म-दनी इन्आमात पर अमल कर के रोज़ाना इस रिसाले में दिये गए खाने पुर कर के अपने ज़ैली मुशा-वरत के निगरान को जम्अ करवाए तू उस के अमल में इस्तिक़ामत अता फ़रमा कर उस को अपना मक्बूल बन्दा बना ले।

म-दनी माह..... 14 सि.हि.

नाम मअ वल्लिदयत.....उम्र तक्रीबन.....

मुकम्मल पता.....

ज़ैली हल्का..... हल्का..... अलाका/शहर.....

आप ने **फ़िक़्रे मदीना** (या'नी मुह्रा-सबे के दौरान खाना पुरी करने) के लिये कौन सा **वक़्त** मुकर्रर फ़रमाया है ?.....

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया



Mo.091 93271 68200

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net